43	डॉ.प्रदीप लाड़	अतुल शर्मा कृत नदी : एक लंबी कविता और पर्यावरण संचेतना	143
44	प्रा. सौ. चंद्रलेखा चव्हाण	हिंदी के पद्य साहित्य में पर्यावरण संरक्षण : समस्या और समाधान	146
45	प्रा. डॉ. संजय चोपडे	नव कविता में पर्यावरण और प्रदूशण संचेतना	149
46	सौ. दिपाली विकास जाधव	अनामिक के कविता में वृध्द विमर्श	152
47	डॉ.सरोज पाटील	निर्मला गर्ग लिखित 'पुत्रमोह' कविता में वृध्दविमर्श	154
48	डॉ. विश्वनाथ महादू देशमुख	आंध आदिवासी लोकगीतों में पर्यावरण संचेतना	156
49	डॉ. मनोहर जमधाडे	भवानी प्रसाद मिश्र की कविता में 'पर्यावरण' संचेतना	158
50	डॉ. एकनाथ श्रीपती पाटील	परिस्थिति से जूझता हुआ 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' उपन्यास का किसान सुरजन सिंह	161
51	श्री. प्रकाश महादेव निकम	आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में वृद्ध विमर्श	163
52	संजय बजरंग देसाई	आधुनिक हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना	165
53	डॉ.युवराज माने	मंगलेश डबराल की कविताओं में पर्यावरण संवेदना	167
54	वर्षा गजानन पाटील	'धूप घड़ी' कवितासंग्रह में पर्यावरण संचेतना	170
55	डॉ. रशीद तहसिलदार	अनबीता व्यतीत' उपन्यास में पर्यावरण सचेतना	172
56	रूपाली संभाजी पाटील	'बूढी काकी' कहानी में चित्रित 'वृध्द विमर्श'	174
57	संदीप पांडुरंग शिंदे	'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श	176
58	सुचिता संतोष भोसले	श्री प्रकाश की कथा 'जल की चोरी'	177
59	डॉ.एस.एन. कांबळे	शेतकऱ्यांच्या वाढत्या आत्महत्या : एक शोकांतिका	179
60	डॉ. सविता अशोक व्हटकर	अण्णा भाऊराव साठे यांच्या कथेतील श्रमसंस्कृती	182
61	प्रा.डॉ.आर.डी.कांबळे	झोंबी कादंबरीतील कृषीकन्या ताराचे भावविश्व	184
62	प्रा.वैशाली श्रीकांत गुंजेकर	दि.बा.मोकाशीच्या प्रवासवर्णनातील ग्रामीण समाजजीवनाचे चित्रण	188
63	डॉ. अरुण शिंदे	सत्यशोधकीय कवितेतील कृषिजन संस्कृतीचे चित्रण	191

मंगलेश डबराल की कविताओं में पर्यावरण संवेदना

डॉ.युवराज माने
सहायक आध्यापक
रावसाहेब रामाराव पाटील कॉलेज,
सावळज.

भूमिका :-

आज विश्व के सामने सबसे महत्वपूर्ण कोई समस्या है ,तो वह है –' पर्यावरण' की सुरक्षा | मानव आपने स्वार्थ के लिए,विकास के नाम पर पर्यावरण का –हास करते जा रहा है | इसी कारण Global Warming की समस्या विश्व को सता रही है | साहित्यकार भी समाज की प्रमुख समस्याओं का वर्णन तथा उसका समाधान अपने साहित्य के माध्यम से लोगों तक पहुँचाने का कार्य करते है | मंगलेश डबराल ऐसे ही एक 'पर्यावरण' प्रेमी साहित्यकार है | मंगलेश जी का जन्म सन 1948ई.में प्रकृति सम्पन्न टिहरी गढ़वाल जिले के काफलपानी गाव उत्तराखंड में हुआ | अनायास ही प्रकृति के प्रति आकर्षण उन्हें दिखाई देता है | पर जब प्रकृति का –हास की स्थिति देखते है ,तो उस पर वह चिंता जताते है | मंगलेश डबराल जी के – 'पहाड़ पर लालटेन' (सन1981ई), घर का रास्ता (सन 1988 ई), हम जो देखतें है (सन 1995ई), और आवाज भी एक जगह है (सन 2000ई) प्रमुख कृतियाँ है | मंगलेश डबराल जी को ओमप्रकाश स्मृति सम्मान(सन 1982ई), श्रीकांत वर्मा पुरस्कार (सन 1989ई), और 'हम जो देखतें है' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार(सन 2000ई), से नवाजा गया है | अनुवादक के रूप में भी वे ख्याति प्राप्त कर चुकें हैं | कविताओं के अतिरिक्त वे साहित्य,सिनेमा,संचार माध्यम,संस्कृति के सवालों पर भी नियमित रूप से लिखते रहें हैं | उनकी कवितओं का अनुवाद भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विश्व की अंग्रेजी ,रुसी,जर्मन, स्पानी,पोल्सकी और बल्गारी आदि भाषाओं में प्रकाशित हुआ हैं |

मंगलेश डबराल की कविताओं में पर्यावरण संवेदना-

'प्रकृति' शब्द 'प्र' उपसर्गपूर्वक 'कृ' धातु में 'क्तिन' प्रत्यय के योग से बना है जिसका अर्थ होता है, 'प्रकरण' या 'संदर्भ' । सामाजिक जीवन में या लोकव्यवहार में 'प्रकृति' से तात्पर्य रहा है, परिवेश में होनेवाली हर वस्तू अर्थात पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी-झरने, पहाड़-पर्वत, विभिन्न रंग आदि संपूर्ण विश्व के संदर्भ में उसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक तथा विस्तृत बन जाता है ।"[1] (डॉ.पाटिल 2011ई.) प्रकृति में चेतन-अचेतन सभी चीजों का समावेश होता है | प्रकृति और मानव का घनिष्ठ संबंध है | मानव के जीवन में प्रकृति का अटल स्थान है | प्रकृति के बिना मानवी जीवन का विचार करना संभव नहीं है |

आदिम युग में मानव गुफाओं में रहता था | उसका जीवन प्रकृति या पर्यावरण पर ही निर्भर रहता था | प्रकृति का चित्रण हमारे आद्य ग्रंथ- वेद,पुराण, उपनिषद, महाभारत, रामायण, भगवतगीतामें मिलता है | इन ग्रंथों में पर्यावरण को देवता के रूप में चित्रित किया है | आज उसी पर्यावरण का –हास मानव आपने स्वार्थ के लिए कर रहा है |

मंगलेश डबराल समकालीन कवि है | उनकी कविअताओं में 'घटती हुए ऑक्सिजन', 'गिरना', 'बारिश', 'बाहर', अनुपस्थिति', 'समय नहीं है', 'मेरी जन्मभूमि मेरी पृथ्वी', 'वसंत', 'यहाँ नदी थी', 'पत्तों की मृत्यु', 'कुछ देर के लिए' आदि कवितओं में हमें पर्यावरण के प्रति संवेदना दिखाई देती है |

मानव अपनी वढती हुई आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्राकृतिक उपदानों का उपयोग करने लगा है |जिससे मानव तथा मानवेत्तर जीवन संकट में आया है | इसी विचार को मंगलेश जी की 'घटती हुए ऑक्सिजन' कविता प्रस्तुत करती है | आज पेड़-पौधे काटने के कारण प्रकृति की विनामूल्य और अनमोल चीज ऑक्सिजन घटती जा रहीं है |ओझोन का स्तर कम होने से 'भू' पर विविध समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है | ऑक्सिजन की जरुरत अधिक महसूस हो रहीं है, कारण-

"बढ़ रहे हैं नाइट्रोजन सल्फर कार्बन के ऑक्साईड
और हवा में झूलते अजनबी और चमकदार कण